रा.स्व.संघ के सरकार्यवाह मोहनराव भागवत ने पाञ्चजन्य के सम्पादक तरुण विजय से विशेष बातचीत में कहा-

'मंदिर निर्माण तो एक पड़ाव है, लक्ष्य है समाज निर्माण'

'देशभक्ति जागती है तो देश का पुरुषार्थ भी जागता है'

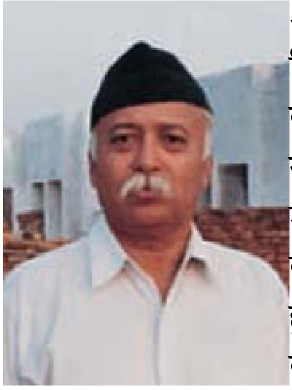

श्री मोहनराव भागवत को दूसरी बार रा.स्व.संघ सरकार्यवाह का दायित्व मिला है। उन्हें यह दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त है कि उनकी तीन पीढ़ियां संघ कार्य को ही समर्पित रही हैं। इनके दादा स्व. नारायण राव भागवत जब नागपुर में ९वीं कक्षा में पढ़ते थे तो पूज्य डा० हेडगेवार के सहपाठी थे। डाक्टर जी ने संघ की स्थापना के पश्चात् जब १९२९ में चन्द्रपुर में संघ कार्य प्रारंभ किया तो श्री नारायण राव वहां के प्रथम प्रतिज्ञित स्वयंसेवक हुए। और तभी से इनका परिवार संघ को समर्पित हो गया। श्री मोहनराव के पिता स्व. मधुकर राव डा. हेडगेवार के समय में ही प्रचारक बने। वे १९४० से '५० तक गुजरात के प्रान्त प्रचारक रहे। श्री मोहनराव भागवत का जन्म चन्द्रपुर में श्रावण अमावस्या के दिन ११ सितम्बर, १९५० ई. को हुआ था। उनके पिताजी प्रचारक जीवन से वापस आकर वकालत के कार्य में संलग्न हो गए थे। जीवन के अंतिम समय तक मधुकर राव जी संघ कार्य में ही रमे रहे। इनकी माताजी श्रीमती मालती ताई भागवत भी राष्ट्र सेविका समिति के कार्यक्रमों में सम्मिलित होती हैं। तीन भाइयों एवं एक बहन में सबसे बड़े श्री मोहनराव की प्रारंभिक शिक्षा चन्द्रपुर में ही हुई, उसके बाद उच्च शिक्षा के लिए वे नागपुर आ गए। यहां इन्होंने १९६७ से '७१ के बीच पशु चिकित्सा विज्ञान (बैचलर आफ वेटिनरी साइंस) में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और इस बीच छात्रावास में रहकर संघ की शाखा लगाते रहे। इससे पूर्व १९६४,'६५ और '६६ में ही उन्होंने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष संघ शिक्षा वर्ग का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया था। मात्र १८ वर्ष की आयु से ही वे संघ शिक्षा वर्ग में शिक्षक रहते आए हैं। पशु चिकित्सा विज्ञान की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् श्री मोहनराव ने एक वर्ष तक सामोर्शी (चन्द्रपुर) में पशु चिकित्सा विकास अधिकारी के रूप में कार्य किया, फिर नौकरी छोड़कर १९७२ में पशु चिकित्सा विज्ञान में स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त करने अकोला आ गए। स्नातकोत्तर के अंतिम वर्ष के छात्र रहते हुए ही श्री मोहनराव की ९ दिसम्बर,१९७४ को प्रचारक के रूप में घोषणा हुई और वे अकोला के नगर प्रचारक नियुक्त किए गए। १९७५ में आपातकाल लागू हो जाने के कारण उन्होंने लिखित परीक्षा तो दे दी, किन्तु शोध सम्मिलित नहीं कर पाए और आपातकाल लागू होने के कारण भूमिगत रहकर संघ कार्य करते रहे। आपातकाल समाप्त होने के पश्चात् मोहन राव अकोला के जिला प्रचारक नियुक्त हुए। तत्पश्चात् '७९ में स्थानान्तरित होकर नागपुर आ गए। १९८० में वे नागपुर प्रांत के प्रांत प्रचारक बने और ५-६ वर्ष पश्चात् नागपुर सहित पूरे विदर्भ के प्रांत प्रचारक रहे। इसके पश्चात् १९९४ में अ.भा. शारीरिक प्रमुख के साथ-साथ उत्तर-पूर्व क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रचारक भी रहे। १९९९ से श्री मोहनराव अ.भा. प्रचारक प्रमुख थे तथा संघ के विदेश विभाग का भी कार्य देख रहे थे। इस कार्य हेतु उन्होंने अफ्रीका, इंग्लैण्ड और अन्य देशों का प्रवास भी किया।

अत्यन्त मृदु स्वभाव के मोहनराव दण्ड, नियुद्ध एवं योगचाप के विशेषज्ञ हैं। मोहनराव का कंठ बहुत मधुर है और वे गीत बहुत अच्छा गाते हैं। प्रस्तुत हैं नागपुर में रेशिमबाग स्थित संघ मुख्यालय में उनसे हुई बातचीत के अंश।

●प्रतिनिधि सभा में आपने अपने उद्बोधन में हिन्दुत्व के बढ़ते प्रभाव और देश के सभी वर्गों द्वारा संघ की भाषा स्वीकार किए जाने और बोलने की बात कही है। परंतु आज तो चारों ओर हिन्दुत्व के साथ निधर्मी एवं विधर्मी शक्तियों के संघर्ष का ही वातावरण दिखता है। हिन्दुत्व का बढ़ता प्रभाव आप किस आधार पर मानते हैं?

□ जब तक हिन्दुत्व की शक्ति पर्याप्त रूप से बढ़ नहीं जाती तब तक ऐसा ही वातावरण दिखेगा । विज्ञान में एक प्रयोग होता है 'टाईट्रेशन' का, जिसमें 'पिपेट' से एक-एक बूंद रसायन तब तक डालते रहते हैं जब तक रंग न बदल जाए। रंग बदलने की प्रक्रिया जारी रहती है, लेकिन तब तक पता नहीं चलता जब तक वह अंतिम बूंद न डल जाए जो बदले रंग को दिखा दे। भारत में भी वातावरण बदल रहा है, लेकिन पूर्ण विश्वास तभी आएगा जब वातावरण पूर्णतः हिन्दुत्व के रंग में रंगा दिखेगा। आज सारी दुनिया में आवाज उठ रही है कि इस्लाम और ईसाइयत से पहले भी मानव सभ्यता का उत्कर्ष था और विश्व की ऐसी सभी संस्कृतियां हजारों वर्ष पूर्व की स्मृतियां ताजा कर रही हैं। अभी मुम्बई में इस विषय में सम्मेलन भी हुआ था, जिसमें विश्व के अनेक देशों से अग्रज आए थे। उन्होंने यही बात की जो हम बरसों से कहते आ रहे हैं।

आज देश में सभी लोग हमारी बात बोल रहे हैं। मैं यह भी स्मरण दिलाना चाहूंगा कि रेडीकल ह्यूमनिस्ट संगठन के नेता श्री मानवेन्द्र नाथ राय ने जीवन के अंतिम पड़ाव पर कहा था कि देशात्म बोध की चेतना जगा कर सामान्य व्यक्ति के सद्गुणों का स्तर जब तक ऊंचा नहीं उठाया जाता तब तक भारत में कोई भला काम सफल नहीं हो सकता। यही बात हमारे वर्तमान राष्ट्रपति डा० अब्दुल कलाम कहते हैं। उन्होंने अपनी एक पुस्तक में तीन बातों पर जोर दिया है- १- भारत ने शक्ति की आराधना छोड़ी, इसी से हम हजार वर्ष से गुलाम रहे।

२-शक्ति सेना और प्रशासन की नहीं, अपितु समाज की होती है। उसे जगाने से ही राष्ट्र की शक्ति का जागरण होता है।

३-समाज की शक्ति जगाने के लिए देशभक्ति की भावना जगानी आवश्यक है, विशेषकर प्रत्येक भारतीय की आंखों में एक महान भारत का सपना जगाना आवश्यक है।
पिछले दिनों प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी सिद्धू से मानचेस्टर में पत्रकारों ने पूछा कि क्या आप जीतेंगे? तो सिद्धू का जवाब था, हमारा प्रबल विश्वास है कि हम जीतेंगे ही, क्योंकि हमारे साथ सौ करोड़ भारतीयों का विश्वास है। यह कौन सा विश्वास है? यह देशभक्ति का विश्वास नहीं तो और क्या है? जब भारत क्रिकेट मैच में हारा तो देशभर में मायूसी छा गई और क्रिकेट खिलाड़ियों की अर्थियां तक निकाली गईं और जब वे जीते तो उन्हें सिर-आंखों पर बिठा लिया गया। क्रिकेट के श्रेष्ठ खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर ने दक्षिण अफ्रीका में बयान दिया कि 'हम अपने देश की विजय के लिए खेलते हैं और पाकिस्तान से हम जीते तो उसका आनंद ही कुछ और है। हमें लगता है कि हम अपने देश के लिए जीते हैं।'

अब इन बातों से बढ़कर कोई संघ को कैसे समझा सकता है!! यही तो बात है जो पिछले ७५ वर्षों से संघ कहता आ रहा है कि देशभक्ति जगाओ तो पुरुषार्थ जगेगा। यही राष्ट्र के विकास

का, हर क्षेत्र में विकास का मूल मंत्र है। हमारी इस मान्यता के तीन मुख्य बिन्दु हैं-
१-हिन्दुस्थान हिन्दू राष्ट्र है।
२-समाज जागरण से सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है।
३-समाज जागरण का आधार है उत्कट देशभक्ति का भाव।
आज इस मान्यता पर कहीं द्वंद्व नहीं दिखता। वैचारिक जगत में यही बात कही जा रही है। सद्‌गुणों को ऊंचा उठाने की बात से किसी का मतभेद हो ही नहीं सकता। यही विचार लेकर हम चल रहे हैं और इसी मार्ग से वातावरण का रंग बदलेगा ही, यह हमारा असंदिग्ध विश्वास है।

वर्तमान परिदृश्य पर नजर डालें तो हिन्दू बनाम हिन्दू का ही द्वंद्व दिखता है। हिन्दू श्रद्धा के मुद्दों पर सर्वाधिक विरोध हिन्दुओं का ही होता है। ऐसा क्यों?

□ पूज्य डाक्टर जी ने भी यही कहा था कि हमारी समस्या मुस्लिम या ईसाई नहीं, मति भ्रमित हिन्दू ही हैं। उन्हें संकीर्णता, छोटे-छोटे स्वार्थों, भेदों और विभ्रमों ने इतना अधिक ग्रस्त किया हुआ है कि वे अपने वास्तविक हिन्दू स्वरूप की अनुभूति ही नहीं कर पाते। जहां तक रा०स्व०संघ की मान्यता का प्रश्न है, हमारे लिए तो मुसलमान और ईसाई भी हिन्दू ही हैं। पूजा पद्धति बदलने से राष्ट्रीयता नहीं बदलती। लेकिन वे भी अपने हिन्दुत्व के प्रति गौरव का बोध तभी करेंगे जब खुद को हिन्दू कहने वाले हिन्दू के नाते बर्ताव करना प्रारंभ करेंगे। जो जानते नहीं वे भी तभी समझेंगे। यह स्थिति धीरे-धीरे आ रही है। मैंने अपने प्रतिवेदन में भी गंज बसौदा की एक घटना का जिक्र किया है, जिसमें पांच सौ मुसलमानों ने गोरक्षा के पक्ष में प्रदर्शन किया और गोहत्या पर पाबंदी की मांग की। ऐसा पहले तो नहीं होता था। अभी ही क्यों होने लगा है? इस पर विचार करना चाहिए। यह बदलते वातावरण का ही एक संकेत है।

एक और उदाहरण देता हूं। अभी कुछ दिनों पहले मुस्लिम पर्सनल ला के वरिष्ठ सदस्य ने बयान दिया कि हमें आपस में नहीं झगड़ना चाहिए, क्योंकि इससे भारत माता के हृदय पर चोट पहुंचती है। अब विचार करना चाहिए कि उन्हें भारत माता की अब याद कैसे आई? पहले तो मुस्लिम नेताओं के बयान ऐसे आते थे कि 'भारत माता डायन है'। अब उन्हें भारत माता के हृदय को चोट न पहुंचे, इसकी चिंता हो रही है। ये सकारात्मक और अच्छे संकेत हैं। हिन्दू जागरण में ही सबका कल्याण है। मुस्लिमों और ईसाइयों की समस्याओं का समाधान भी हिन्दू जागरण में निहित है।

परंतु जो तथाकथित उच्च धनाढ्य वर्ग और अंग्रेजी पढ़ा-लिखा समाज है, उसमें इस प्रकार के संकेत क्यों नहीं दिखते?

□ आज नहीं तो कल उनमें भी यह परिवर्तन आएगा। वे लोग कोई अमर पट्टा लेकर नहीं आए हैं। आखिर कब तक वे आत्म विस्मृति के अंधेरे में पड़े रहेंगे? जब वातावरण बदलता है और जागरण होता है तो सब पर प्रभाव डालता है। और ऐसे में केवल शिक्षा पद्धति काम नहीं करती। जो अंग्रेजी पढ़े-लिखे हैं वे भी हमारी बात के प्रखर समर्थक बनेंगे। आखिरकार इसी अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से पढ़कर श्री अरविंद और सुभाष चन्द्र जैसे नेता भी आए थे। सुरक्षा की ढाल संस्कारों से मिलती है। अगर संस्कार ठीक होंगे तो आप कैसी भी शिक्षा पद्धति से पढ़कर आएं उसका कोई नकारात्मक असर नहीं पड़ सकता। हम संस्कारों की इसी शक्ति का जागरण कर रहे हैं।

● **एक समय था जब हिन्दू समाज में आंतरिक सुधार के लिए भी प्रखरता से अभियान**

चलाए जाते थे। विधवा विवाह, सती प्रथा पर रोक, मंदिरों में स्वच्छता, तीर्थ स्थानों में पंडितों तथा पंडों द्वारा यात्रियों के साथ दुर्व्यवहार रोकना एवं जाति की कुरीतियों, अस्पृश्यता के विरुद्ध जागरण इत्यादि। आज बात सिर्फ मंदिर निर्माण की हो रही है। क्या इन सब सुधारों के बारे में भी हमें तीव्रता से नहीं बोलना चाहिए?

☐ जो दुःख आपको हो रहा है वह प्रत्येक हिन्दू को क्यों नहीं हो रहा? मंदिर साफ रहें, हिन्दू समाज कुरीतियों से दूर रहे, यह तो हर हिन्दू की इच्छा होनी चाहिए और उसी प्रकार से प्रयास भी होने चाहिए। ये सब काम कानून बनाने से तो होते नहीं। प्रत्येक हिन्दू को यह दर्द इसलिए नहीं होता क्योंकि उसके मन में यह भाव ही नहीं उठता कि यह मेरा देश है। यहां की संस्कृति मेरी जीवन संस्कृति है, इसलिए यह देश सर्वांग सुंदर होना चाहिए। जब यह भाव मन में जगेगा तो अपने आप केवल कुरीतियों के विरुद्ध लड़ने का ही साहस नहीं आएगा बल्कि वह अपने आसपास की हर जगह को भी साफ-सुथरा रखने की कोशिश करेगा, क्योंकि इस देश के प्रति उसका भाव मातृभक्ति का भाव होगा और वह अपनी मातृभूमि को कभी भी गंदा नहीं रखना चाहेगा।

राम मंदिर निर्माण का आंदोलन भी इसी अनुभूति को जगाने के लिए है कि हमारा जो कुछ भी है उसका सम्मान रहना चाहिए। अपने देश और देश के मान बिन्दुओं और गौरव स्थलों के प्रति स्वाभिमान जागरण होगा तो सभी समस्याओं का समाधान होगा। इसलिए मंदिर निर्माण तो मात्र एक पड़ाव है, मंजिल तो आगे की है। एक भजन में भी तो कहा गया है- राम जी की भद्रता का ध्यान धरिए, राम का गुणगान करिए। इसी मार्ग से हम हिन्दू जागरण की मंजिल तक पहुंचेंगे। हमारा लक्ष्य है समाज निर्माण यानी अच्छे, सच्चे, पक्के हिन्दू का निर्माण।

● पर राम मंदिर बनने से अच्छे, सच्चे, पक्के हिन्दू कैसे बनेंगे?

☐ इस पूरी प्रक्रिया में हिन्दू के मन में यह भाव तीव्रता से जागृत हो रहा है कि उसके हिन्दू होने का अर्थ क्या है। आज जो हिन्दू हैं क्या वे अपने हिन्दूपन की स्पष्ट कल्पना करते हैं? विडम्बना यह है कि वह तो यह मान लेता है कि, 'मैं चर्च नहीं जाता, मस्जिद नहीं जाता, इसलिए मैं हिन्दू हूं।' हिन्दू होने के मूल्य क्या हैं? हिन्दू जीवन पद्धति क्या है? हिन्दू धर्म को जीने के लिए किन मान्यताओं का होना जरूरी है? इस सबकी वह कल्पना भी नहीं करता। जब वह अपने हिन्दू होने का अर्थ समझ जाएगा तो हमें कुछ और समझाने की आवश्यकता भी नहीं रहेगी।

ऐसा भी नहीं है कि उच्च धनाढ्य वर्ग में अथवा बड़े पदों पर जो लोग हैं उनमें इसके प्रति जागृति नहीं है। वे सबके सब एक जैसे नहीं हैं। शासन, प्रशासन एवं राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे अनेक श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने एक सच्चे हिन्दू का जीवन जिया है। व्यक्ति को अपने कुल की प्रतिष्ठा का भान हो तो फिर उसे वह दृष्टि भी होती है कि वह कैसे अपने कुल की परंपरा के अनुरूप जीवन जिए। पर वह जब जानेगा ही नहीं तो वैसा जिएगा कैसे? स्वामी विवेकानंद की भी शेर-बकरी वाली कथा है। शेर को जब तक अपने शेर होने का अहसास न हो तो वह बकरी की तरह ही व्यवहार करता है। जिस क्षण उसे शेर होने का अहसास हो जाता है तो उसका जीवन ही बदल जाता है। हनुमान जी को भी अपनी शक्ति का अहसास कराया

गया था तब उन्होंने उसके अनुरूप कार्य किया था। हिन्दुओं को यही अहसास दिलाना हमारा काम है।

● पिछले दिनों कुछ समाचार पत्रों ने छापा कि शाखा में स्वयंसेवकों की उपस्थिति घट रही है तथा नई तकनीक, प्रौद्योगिकी तथा वातावरण के कारण शाखाओं की पद्धति में जब तक परिवर्तन नहीं लाया जाता तब तक नई पीढ़ी के प्रगतिगामी युवाओं को आकृष्ट करना कठिन होगा।

☐जब हम संघ कार्य का विश्लेषण करते हैं तो शाखा पद्धति को सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक पाते हैं। दोष पद्धति का नहीं है। मैं पिछले दिनों १०६ शाखाओं में जाकर आया। इतनी अच्छी शाखाएं और इतने अच्छे कार्यकर्ता मिले कि मन आनंदित हो उठा। देश में हमारे पास स्वयंसेवकों का इतना प्रतिभाशाली एवं अनुपम भंडार संग्रह है जो अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता। हमारे स्वयंसेवक दुनिया में जहां भी जाते हैं- मान, प्रतिष्ठा और यश पाते हैं। अभी पिछले ही दिनों का एक अनुभव है। बिलासपुर से हमारा एक स्वयंसेवक बंगलौर की एक बड़ी कम्पनी में साक्षात्कार के लिए गया। वहां उससे पूछा गया कि आप खाली समय में क्या करते हैं? स्वयंसेवक का उत्तर था- मैं समाज का कार्य करता हूं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में प्रतिदिन जाता हूं। तो फिर प्रश्न पूछा गया कि आप वहां जो एक घंटा करते हैं वही हमारे यहां भी करिए। स्वयंसेवक का उत्तर था-हां, क्यों नहीं। कम्पनी वालों ने उस स्वयंसेवक को तुरन्त नौकरी दे दी। शाखा कार्य यानी ईमानदारी और अनुशासन से दिए गए कार्य को समाज और देश का हित ध्यान में रखते हुए करना। हमें तो स्वयंसेवक ही बताते हैं कि बिजनेस मैनेजमेंट (प्रबंधन), एडवांस्ड लीडरशिप (सुविकसित नेतृत्व) जैसे विषयों में भी वह स्वयंसेवक आगे रहता है जो शाखा पद्धति से निकला है, क्योंकि यहां वही सब होता है जो शाखा में सिखाया जाता है।
आपातकाल के बाद कलकत्ते की कुछ शाखाएं देखने के लिए कुछ कम्युनिस्ट कार्यकर्ता आए और उन्होंने संघ का एक शिविर भी देखा। वे जानना चाहते थे कि संघ कार्य के पीछे तत्व कौन सा है? उसके बाद उन्होंने लिखा कि संघ के इस प्रशिक्षण से और कुछ होता है या नहीं, पता नहीं, परन्तु हमने पाया कि ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के किशोर और तरुण इन शिविरों में २० दिन रहते हैं। उनका खुद पर इतना विश्वास बढ़ जाता है कि वे कहीं भी किसी भी, स्थिति में पहुंच जाएं, उसका सफलता से सामना करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

● गोधरा और गुजरात के बाद हिन्दू बनाम मुस्लिम का प्रश्न तीव्रता से सामने खड़ा हुआ है। बार-बार कहा जाता है कि संघ मुस्लिम विरोधी है।
☐ हम हमेशा से यह कहते आए हैं कि पूजा-पद्धति अलग होने का अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि राष्ट्रीय मुद्दों पर भी मतभेद हो जाए। हिन्दुत्व में पूजा-पद्धति के आधार पर किसी से भेदभाव की बात ही नहीं है। वेद काल से हमारे यहां से विभिन्न पंथ, प्रांत, भाषाएं, पहनावा, खानपान यहां तक कि राज्य पद्धतियां भी अलग-अलग रहीं, परन्तु इस सब के बावजूद भाव यही रहा कि हम सब मिलकर एक हैं और हर तरह की भिन्नताओं को सरसाते हुए हम साथ रहेंगे। विविधता में एकता हमारी संस्कृति का सबसे प्राचीन मूल्य है। बल्कि भारत में बाहर से आए पंथ एवं सम्प्रदाय ही विविधता को समाप्त करने का काम कर रहे हैं। इस देश को अपना मानने वाले सभी को संघ हिन्दू कहता है, जिसमें ईसाई और मुसलमान भी सम्मिलित हैं। ये हिन्दू चार प्रकार के हैं- १. अपने हिन्दू होने के बारे में जानते हैं और गर्व से स्वयं को हिन्दू

कहते हैं। २. अपने हिन्दू होने के बारे में जानते हैं लेकिन संकोच करते हैं। ३. अपने हिन्दू होने के बारे में जानते हैं पर स्वार्थवश कहते नहीं। ४. अपने हिन्दू होने के बारे में जानते ही नहीं। हिन्दू समाज का संगठित स्वरूप जब सामने आएगा तो जिन हिन्दुओं का स्मृति लोप हुआ है उन्हें भी वापस स्मृति आएगी। हम तो कहते हैं कि ईसाई और मुसलमान भी अपने बारे में सांस्कृतिक विचार करें। वे इसी देश के हैं, यहीं जीना मरना है। यहां की पहचान खोकर उनका अस्तित्व ही अकल्पनीय है। इसीलिए हिन्दू समाज के शक्तिशाली होने में उनका भी उत्थान निहित है।

●आप हिन्दू समाज के शक्तिशाली होने की बात करते हैं, लेकिन कुछ समय से तो यह दिख रहा है कि हिन्दू संगठनों के पारिवारिक मतभेद एवं विवाद सार्वजनिक रूप से प्रकट हो रहे हैं। ऐसी भाषा का प्रयोग हो रहा है जो न शालीन है, न सुसंस्कृत और न भद्र। क्या यह उचित है?

□ संघ का पहले से ही यह संस्कार रहा है कि मतभेद संभव हैं लेकिन मनभेद नहीं होने चाहिए। जहां मतभेद हैं वहां उसके समाधान हेतु व्यवहार का तरीका यह है कि सौहार्द्रपूर्ण ढंग से वाणी संयम एवं वाणी विवेक का पालन करते हुए नीतियों एवं कार्यक्रमों के बारे में अपनी बात कहें। आलोचना भी हो सकती है, लेकिन संघ व्यक्तिगत टीका-टिप्पणी व दुर्भावना को कभी स्थान नहीं देता। इसलिए सभी संगठनों में जो स्वयंसेवक हैं उन्हें इसी संस्कार के अनुरूप चलना चाहिए। संघ का कहना है कि कोई बड़ा दोष यदि बताना है तो उसे व्यक्तिशः भी बताया जाए। परन्तु सार्वजनिक विवाद से कोई समाधान नहीं निकलता।

●कई बार आरोप लगता है कि संघ का कार्य केवल भाजपा समर्थक हिन्दुओं तक सीमित है। अगर हम हिन्दू समाज का संगठन कर रहे हैं तो अन्य राजनीतिक दलों के हिन्दुओं को भी संघ कार्य में सम्मिलित करने में अथवा स्वयंसेवकों के उन दलों में जाने में क्या बाधा है?

□ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संविधान में स्पष्ट लिखा है कि हमारे स्वयंसेवक राष्ट्रविरोधी गतिविधियां न करने वाले किसी भी राजनीतिक दल में जा सकते हैं। परन्तु स्वयंसेवक संघ शाखा में प्राप्त संस्कारों के प्रकाश में यह भी देखता है कि जिन नीतियों को वह देश के लिए उचित मानता है उन्हें समर्थन और प्रोत्साहन देने वाले दल कौन-कौन से हैं और उन संस्कारों तथा नीतियों को गाली देने वाले दल कौन से हैं? स्वयंसेवक किसी दल का दरवाजा खटखटाए तो दरवाजा खोलने वाले दल कौन से हैं? हमारा इतना विशाल और विराट संगठन है। राष्ट्रहित में हम सबका सहयोग लेना भी चाहेंगे एवं सहयोग देना भी चाहेंगे। परन्तु यह तो उन दलों को विचार करना है कि उन्हें हमारे सहयोग की आवश्यकता है या नहीं? जो दल हमारे संस्कारों के प्रकाश में ऐसा विचार करता है उसे स्वयंसेवक अपना समर्थन देते भी हैं।

● अयोध्या में उत्खनन प्रारंभ हो गया है और उधर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय घोषित होने की प्रतीक्षा है। स्वयंसेवक सरकार में भी हैं और यदि राममंदिर के लिए आंदोलन की स्थिति आती है तो उस आंदोलन में भी स्वयंसेवक शामिल होंगे। सरकार के विरुद्ध ऐसे आंदोलन होने से जो स्थिति पैदा होगी उसके बारे में आप क्या सोचते हैं?

शांतिपूर्ण ढंग से न्यायोचित सत्याग्रह प्रजातंत्र में वर्जित नहीं है। स्वयंसेवक कानून के नियमों का पालन करते हुए यदि सविनय अवज्ञा आंदोलन करते हैं तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं होगा। प्रजातंत्र-सम्मत मार्ग का अवलम्बन करते हुए अपनी बात सरकार के कानों तक पहुंचाना न तो युद्ध है और न ही सरकार से आमना-सामना करना। यदि कोई संगठन अपने मुद्दे के पक्ष में सरकार को जनसमर्थन दिखाते हैं तो उसे देखकर सरकार को भी उचित निर्णय लेने में सुविधा होती है। अयोध्या में राममंदिर निर्माण हेतु मांग सदियों से लटकी हुई है। सरकार की अपनी मजबूरियों की सीमा है। यदि उन मजबूरियों को पार करने में जनभावना सहायक होती है तो यह उचित ही है।

http://www.panchjanya.com/23-3-2003/6-7.html